भारतीय संगीत का वर्गीकरण Classification of Indian Music:

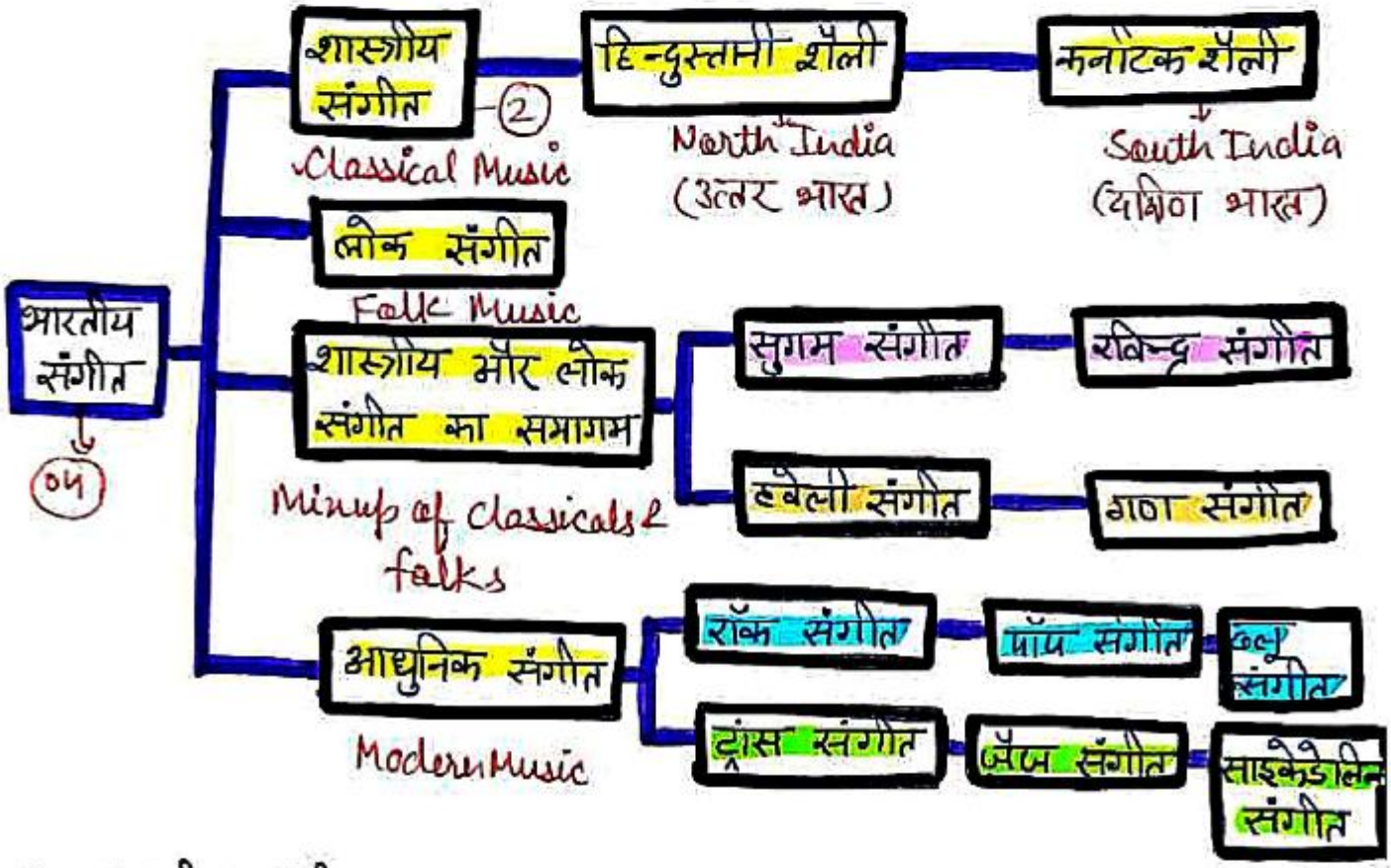

★ शास्त्रीय संगीत

भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो अलग-अलग शैलियों का विकास हुआ है:

Two distinct styles of Indian classical music have developed:-

① हिन्दुस्तानी संगीत :- इसका भारत के उत्तरी भागों में अभ्यास किया जाता है।

Hindustani Music :- It is practised in the northern parts of India.

② कर्नाटक संगीत :- इसका भारत के दक्षिणी भागों में अभ्यास किया जाता है। हालाँकि दोनों प्रकार के संगीत की ऐतिहासिक जड़े भरत के नाट्यशास्त्र में पायी जाती है, परंतु इनमें 14 वीं सदी में अलगाव हो गया।

Carnatic Music :- It is practised in the southern parts of India. Although both forms of music have their historical roots in Bharata's Natya Shastra they diverged in the 14th century.

★ हिंदुस्तानी संगीत –

→ संगीत की हिंदुस्तानी शाखा संगीत संरचना और उसमें तात्कालिकता की संभावनाओं पर अधिक केंद्रित होती है। हिंदुस्तानी शाखा में शुद्ध स्वर सप्तक या प्राकृतिक स्वरों के सप्तक' के पैमाने को अपनाया गया।

The Hindustani branch of music focuses more on musical structure and the possibilities of improvisation in it. The Hindustani branch adopted the scale of shuddha Swar Saptak or 'octave of Natural notes'.

Imp → 'ध्रुपद', 'धमार', 'होरी', 'ख्याल', टप्पा, चतुरंग, रससागर, तराना, सरगम और ठुमरी जैसी हिंदुस्तानी संगीत में गायन की दस मुख्य शैलियां हैं। जिनमें से प्रमुख शैलियों इस प्रकार है.

There are ten main styles of singing in Hindustani music like 'Dhrupad', 'Dhamar', 'Hori,' 'Khyal', 'Tappa', 'Chaturang', 'Rassagar', 'Tarana', 'Sargam' and 'Thumri', the main styles of which are as follows.

Imp ध्रुपद शैली :- यह हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सबसे पुराने और भव्य रूपों में से एक है तथा इसका वर्णन नाट्यशास्त्र में भी किया जाता है।

It is one of the oldest and grandest forms of Hindustani classical music and is also described in Natya Shastra.

प्रमुख ध्रुपद गायक :- अमीर खुसरो, स्वामी हरिदास, मियाँ तानसेन Imp बैजूबावरा, नौबत खान Imp, गुणसमुंद्र

Amir Khusro, Swami Haridas Imp, Miyan Tansen, Bejubawara, Naubat Khan, Gunasamundra

★ प्रमुख ध्रुपद घराने

डागरी घराना, दरभंगा घराना, लयकारी, बेतिया घराना, तलवंडी घराना | Dagri Gharana, Darbhanga Gharana, Layakari, Bettiah Gharana, Talwandi Gharana

Imp Imp

★ ख्याल शैली

ख्याल शैली (ख्याल) शब्द फारसी से लिया गया है, जिसका अर्थ 'विचार या कल्पना' होता है। उल्लेखनीय है कि इस शैली के उद्भव का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है।

The word 'Khayal Style' (Khayal) is derived from Persian, which means 'thought or imagination'. It is noteworthy that the credit for the origin of this style is given to Amir Khusro.

Imp ⇒ 15 वीं सदी में हुसैन शाह (शर्की (जौनपुर) सल्तनत के शासक) इसके सबसे बड़ा संरक्षक थे

In the 15th century, Hussain Shah (ruler of the Sharqi Jaunpur Sultanate) was its biggest patron

⇒ असाधारण ख्याल रचनाएँ भगवान कृष्ण की स्तुति में की जाती है,

Extraordinary Khayal compositions are done in praise of Lord Krishna.

⇒ ख्याल संगीत के अंतर्गत प्रमुख घराने है।

There are major gharanas under Khayal music.

ख्याल शैली

★ ग्वालियर घराना

नत्थन खान

कलाकार :- नत्थू खान, विष्णु दिगंबर पलुस्कर

Artist :- Nathu Khan, Vishnu Digambar Paluskar

Imp ★ किराना घराना :

कलाकार :- अब्दुल करीम खान, अब्दुल वाहिद खान, पंडित भीमसेन जोशी

Artist :- Abdul Karim Khan, Abdul Wahid Khan, Pandit Bhimsen Joshi

★ आगरा घराना :- आगरा घराने का संगीत ख्याल और ध्रुपद Imp गायकी का मिश्रण है

The music of Agra Gharana is a mixture of Khayal and Dhrupad singing.

कलाकार :- हाजी सुजान खान, फैयाज खान, हुसैन खान

Artists :- Haji Sujan Khan (Imp), Faiyaz Khan, Hussain Khan

★ पटियाला घराना :-

कलाकार :- फतेह अली खान, अली बख्श जरनैल खान, बड़े गुलाम अली खान (Imp)

Artists :- Fateh Ali Khan, Ali Bakhsh Jarnail Khan, Bade Ghulam Ali Khan (Imp)

★ भिंडी बाजार घराना

कलाकार :- छज्जू खान, नजीर खान, खादिम हुसैन

Imp.

Cast :- Chajju Khan, Nazir Khan, Khadim Hussain

★ तराना शैली

⇒ इसमें तीव्र गति से गाये जाने वाले कई शब्दों का प्रयोग होता है। 13 वीं - 14वीं शताब्दी में अमीर खुसरो द्वारा फिर से तराना शैली का अविष्कार किया गया।

It uses many words which are sung at a fast pace. The Tarana style was reinvented by Amir Khusro in the 13th - 14th century.

⇒ विश्व के एक प्रसिद्ध तराना गायक मेवाती घराने के पंडित रत्न मोहन शर्मा तराना

Pandit Ratna Mohan Sharma of the Mewati Gharana is a famous Tarana singer of the world.

उपाधि :- तराना के बादशाह

→ King of Tarana

हिन्दुस्तानी संगीत की अर्द्ध-शास्त्रीय शैली

[Semi classical Style of Hindustani Music]

⇒ संगीत की अर्द्ध-शास्त्रीय शैली भी स्वर (सुर) पर आधारित है

The semi-classical style of music is also based on Swara(Sur).

कुछ प्रमुख अर्ध-शास्त्रीय शैलियों जैसे ठुमरी, टप्पा और गजल की नीचे चर्चा की गई है।

Some of the major semi-classical styles like thumri, tappa and ghazal are discussed below

ठुमरी :- यह उत्तर प्रदेश में उत्पन्न हुई और आमतौर पर मिश्रित सरल रागों पर आधारित है। Imp

It originated in Uttar pradesh and is usually based on mixed simple ragas.

⇒ ठुमरी शास्त्रीय नृत्य कथक से जुड़ी हुई है

Thumri is associated with the classical dance form Kathak.

⇒ ठुमरी के मुख्य घराने वाराणसी और लखनऊ में स्थित है और ठुमरी गायन की सबसे कालातीत (प्रसिद्ध) आवाज बेगम अख्तर की है।

The main gharanas of thumri are located in Varanasi and Lucknow and the most timeless (famous) voice of thumri singing is that of Begum Akhtar.

⇒ पूरब अंग ठुमरी की गिरिजा देवी और छन्नूलाल मिश्रा अन्य प्रसिद्ध प्रस्तावक है। "ठुमरी गायन की रानी"

Girija Devi and Chhannulal Mishra are other famous proponents of purva Ang thumri.

★ **टप्पा**:- इस शैली में लय की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि रचनाएं तेज, सुक्ष्म और जटिल संरचनाओं पर आधारित होती है।

Rhythm plays a very important role in this style, as the the compositions are based on fast, subtle and complex structures.

इस शैली के कुछ विशिष्ट प्रतिपादाओ मे से है ग्वालियर घराने के लक्ष्मण राव पण्डित तथा रामपुर-सहसवां घराने के शन्नो खुराना

Some of the prominent exponents of this style are Laxman Rao Pandit of the Gwalior gharana and Shanno Khurana of the Rampur-Sahaswan gharana.

गजल:- गजल एक छोटी कविता होती है जिसमें तुकबन्दी वाले दोहे होते है, जिन्हे बैत या शे'र कहा जाता है।

Ghazal is a short poem which contains rhyming couplets, which are called bayt or sher.

- इसका विषय केवल प्रेम होता है। It subject is only love
- भारत में पहला गजल लिखने वाले अमीर खुसरो थे

Amir Khusro was the first person to write a Ghazal in India.

गजल से जुड़ी कुछ प्रमुख हस्तियों :- बहादुर शाह जफर (1837-57) → दरबारी

मुहम्मद इकबाल, मिर्जा गालिब, रूमी, हाफिज, राहत इन्दौरी, फराक गौरखपुरी, वसीम बरेलवी, कुँवर बैचेन, जगजीत सिंह, मन्नाडे, भूपेन्द्र सिंह, मन्नहर उदास, पंकज उदास, सहबाज असानी, बैगम अख्तर

↳ 'मलिका-ए-गज़ल' (गजलों की रानी)

Muhammad Iqbal, Mirza Ghalib, Rumi, Hafiz, Rahat Indori, Farag Gorakhpuri, Wasim Barelwi, Kunwar Baichain, Jagjit Singh, Mannade, Bhupendra Singh, Mannhar Udas, Pankaj Udas, Sahbaz Amani, Begum Akhtar

कर्नाटक संगीत

कर्नाटक संगीत मुख्य रूप में दक्षिण भारत से जुड़ा है। यहाँ मुख्य रूप से स्वर संगीत पर जो दिया गया है। जहाँ अधिकांश रचनाएँ गाने के लिए लिखी जाती हैं। अधिकांश कर्नाटक रचना या तो तेलगू (आन्ध्र), कन्नड (कर्नाटक), तमिल (TN) या संस्कृत में हैं।

Carnatic music is primarily associated with South India. the focus here is mainly on vocal music. Where most compositions are written for singing Most carnatic compositions are either in Telugu Kannada Tamil or sanskrit.

हिन्दुस्तानी संगीत की तरह कर्नाटक संगीत भी तो (तत्वों) पर आधारित है- राग और ताल। किसी कर्नाटक शैली में प्रत्येक रचना के कई भाग होते हैं।

Like Hindustani music, Carnatic music is also based on two elements- raga and tala. Every composition in a Carnatic style has several parts.

पल्लवी :-

अनुपल्लवी :-

चरण :-

कर्नाटक संगीत के शुरुआती प्रतिपादक

अन्नमाचार्य :-

- कर्नाटक संगीत के पहले जाने-माने संगीतकार
  The first well-known composer of Carnatic music

Imp पुरंदर दास → father of karnataka Music 'कर्नाटक संगीत के जनक

- कर्नाटक संगीत के संस्थापक प्रतिपादकों में से एक
  One of the founding exponents of Carnatic music
- वे भगवान् कृष्ण के भक्त थे
  He was a devotee of Lord Krishna
- उन्हें ऋषि नारद का अवतार माना जाता है
  He considered to be an incarnation of the sage Narada.

उनकी प्रसिद्ध रचना में दास साहित्य शामिल है।

His famous work includes Das Sahitya.

क्षेत्रय्या :-

इनके (पद्म) आज भी भरतनाट्यम और कुचिपुडी प्रदर्शन के दौरान गाये जाते हैं।

His Padmas are still sung during Bharatanatyam and Kuchipud performances.

भक्त रामदासु

वेंकटमाखिन :-

वह कर्नाटक संगीत के एक प्रसिद्ध प्रस्तावक थे।

He was a famous proponent of Carnatic music.

उन्होने चतुर्दण्डीप्रकाशिका नामक ग्रन्थ लिखा।

He wrote the (Imp) book Chaturdandiprakasika.

गुडलूर नारायणस्वामी बालासुब्रमण्यम, सारंगदेव (Imp), टी. एम (Imp) कृष्णा और ओ. एस. अरुण कर्नाटक संगीत के कुछ प्रसिद्ध संगीतकार हैं।

Gudalur Narayanaswamy Balasubramaniam, Sarangadeva T.M Krishna and O.S Arun are some of the famous composers of Carnatic music.

कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति

- Male त्यागराज
- मुथुस्वामी
- श्यामा शास्त्री

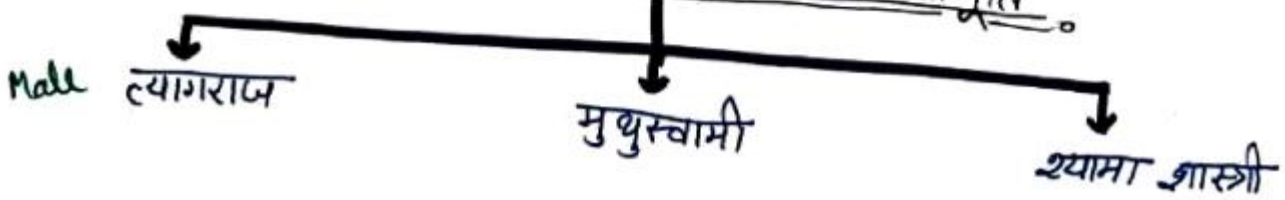

एमएस सुब्बालक्ष्मी, डीके पट्टम्मल, और एमएल वसंतकुमारी, जो 20वीं सदी के कर्नाटक संगीतकार हैं, को लोकप्रिय रूप से कर्नाटक संगीत की महिला त्रिमूर्ति के रूप में जाना जाता है।

MS Subbalakshmi, DK Pattammal, and ML Vasanthakumari, 20th-Century Carnatic musicians, popularly known as the female trinity of Carnatic music.

भारतीय संगीत पर महत्वपूर्ण पुस्तकें

सामवेद	→	व्यास
नाट्यशास्त्र	→	भरतमुनि
शेल्पादिकारम		इलांगो-
अभिलाषितार्थ चिन्तामणि	→	सोमेश्वर
गीत गोविन्द	→	जयदेव
संगीत रत्नाकार	→	सारंगदेव
संग्रह चूड़ामणि	→	गोविन्दाचार्य
संगीत दर्पण	→	दामोदर पंडित